हिन्दी साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान

डॉ० शिप्रा वर्मा,
असि० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग , डा० भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, अनौगी, कन्नौज

शोध सारांश

वर्तमान समय में महिलाओं ने साहित्य के माध्यम से अपने विचार समाज के समक्ष प्रस्तुत किये हैं। साहित्य के माध्यम से ऐसा स्थान रचनाकारों को मिला है जहाँ वे स्वतंत्र होकर अपनी सोच से पाठकों को रूबरू करा सकती हैं। आज की स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में अपनी एक अलग सोंच रखती है इसी कारण स्त्री का आधुनिक एवं वैचारिक रुप सामने आया है। जिस प्रकार दलित लेखन को साहित्य में स्थान प्राप्त हो चुका है वैसे ही स्त्री लेखन भी साहित्य में अपनी मजबूत पहचान बना चुका है। महिलाओं ने अपने संघर्षों, पीड़ा, कष्ट को स्वयं चित्रित किया है इसी कारण इनका साहित्य स्वानुभूति से युक्त है। बेशक इनके साहित्य पर आलोचनात्मक हमले भी सबसे अधिक हुये है लेकिन अपने ऊपर विश्वास ही महिला रचनाकारों की सबसे बड़ी ताकत रही है। प्रस्तुत लेख में ऐसी ही मुख्य महिला रचनाकार और कवयित्रियों को लिया गया है जिन्होने अपनी लेखनी से अपनी बेचैनी को अपनी शक्ति बना लिया है।

महिला रचनाकारों का अवलोकन महिला कथाकार एवं कवयित्रियों के माध्यम से प्रस्तुत लेख में किया जा रहा है।

लेखिकाओं का कथा साहित्य

हिंदी कथा जगत में महिला कथाकार अप्रतिम भूमिका निभा रही है। वह अपने अनुभव को अपनी तरह से व्यक्त कर रही है। उनका विद्रोह यथास्थिति के खिलाफ वह अपने लेखन के माध्यम द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। उनकी रचनाओं को पढ़ने पर ज्ञात होता है इनका लेखन परम्परा के खिलाफ नहीं है, परंतु वह बंधन मुक्त होकर अपनी मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति करना चाहती है। प्रभा खेतान कहती है, "हम स्त्रियों के पास इसके सिवा चारा ही क्या है। हम अपने आपको उखाड़कर ही यथास्थिति के खिलाफ विद्रोह कर पाती है। हमारा अपना अंतरंग अनुभव ही हमारा पहला अस्त्र है। वहीं हमारी बौद्धिकता का प्रस्थान बिंदु है। उसकी प्रामाणिकता ही उसे आगे चलकर इतिहास बनाती है।"[१] लेखिकाएं 'पर्सनल इज पॉलिटिकल' को समझाती है। लवलीन लिखती है, "स्त्रीवादी लेखन का प्रमुख नारा है - 'पर्सनल इज पॉलिटिकल। यह नारा नहीं, जीवन दर्शन है। आधार भूत सच्चाई है। जब तक स्त्री के जीवन-संघर्ष के अनुभवों, व्यक्तिगत अनभूतियों और यथार्थ स्थितियों का खुलासा नहीं होगा, तब तक हमें समाज में उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्थिति का त्रासद बोध भी नहीं होगा। प्रतिकार विरोध और संघर्ष के संचारी भावों का प्रसार भी नहीं होगा। .... आखिर जो उसके जीवन का मर्म है वही तो साहित्य में प्रतिबिंबित होगा।"[२]

'नेपथ्य' अर्चना वर्मा की कहानी है। यह कहानी पौराणिक कथाओं में व्याप्त शकुन्तला एवं दुश्यंत के चरित्र पर आधारित स्त्री-दृष्टिकोण से 'शकुन्तला एवं दुश्यंत' के चरित्र की व्याख्या करती है। यह पौराणिक कहानी 'शकुन्तला एवं दुश्यंत' को आधुनिक रूप में प्रस्तुत करती है।

ऐसा निरूपम प्यार कि सुध-बुध खोई बैठी रही शकुंतला और उसने सुना ही नहीं कि दुर्वासा आए? और दुर्वासा के शाप से दुश्यंत ने भुला दिया शकुंतला को? और अंगूठी जल में गिरी और मछली ने खायी और ठीक वही मछली पकड़कर मछुवारा काटता है तो निकलती है अंगूठी ठीक उसी खरीदार के पास जा पहुँचता है जो उसे पकड़कर राजा के पास ले जाए? रहने भी दो यह लीपा-पोती। पुरूष के साथ पुरूष की मिली भगतं हिम्मत है तो सुनाओं न असली किस्सा।"[३] यह इतिहास की पुनर्व्याख्या है। शरद सिंह की कहानी 'हुस्न बानू का आठवाँ सवाल' भी इतिहास की पुनर्व्याख्या है, जो 'किस्सा-ए-हातिम' पर आधारित है।

'हुस्नबानू' अपने पति मुनीरसामी को कठघरे में कैद कर देती है। क्योंकि वह 'पुरूष नियति' का शिकार बनती है। चाहे स्त्री किसी भी देश-काल की हो उसकी समस्या लगभग एक जैसी है। "इससे क्या अंतर पड़ता है कि वह फारस की है। या भारत की चीन की है या योरोप की सचमुच इससे कोई अंतर नही पड़ता है, मुख्य बात यह है कि वह स्त्री है। किस्सा-ए-हतिमताई' में हुस्नबानू का एक स्त्री होना ही पर्याप्त है बस्स, देशकाल अथवा समाज कोई भी हो सकता था। समूची दुनिया की स्त्रियाँ लगभग एक-सी त्रासदी सहती है-पुरूषों द्वारा अपने से दोयम समझे जाने की।"[४]

मधुकांकरिया की कहानी 'फाइल' धर्म को निरपेक्ष भाव से स्वीकारनां राजेन्द्र यादव संपादकीय सोच का परिचायक है, "हम भारतीयों को तो पूजापाठ, धर्मशालाएं, तीर्थ-यात्रा और मंदिर निर्माण से ही कहा फुर्सत है।" तथा इन्होंने धर्म को जीवन और रोटी से सीधा जोड़कर इसे फुटपाथों और झुग्गियों तक पहुँचाया है, जबकि हमने धर्म की ऊँची उड़ाने भरी हैं।" (हंस, मार्च २००६) धर्म आज मनुष्य को अंधा करने पर उतरा हुआ है, जहाँ खड़े हुए उन्हें यह नहीं दिखाई पड़ रहा कि यदि ईश्वर कहीं रह भी रहा है, तो कम-से-कम वह ईंटों और पत्थरों की इमारतों में नहीं है। यदि ईश्वर वहाँ होता तो मनुष्य की क्या मजाल और क्या ताकत थी कि इन्हें सब्बलों, शैतियों और बमों से गिराने की जुर्रत करता? पंखुरी सिन्हा की कहानी 'समानांतर रेखाओं का आकर्षण' आज का बाजार पूंजी के हाथो ऐसा औजार-हथियार है, जो मनुष्य समाज के ग्राहकों और विक्रेताओं का हाट बनता जा रहा। इन्हीं दृष्टियों में कहानी की चीख पाठक को नई चेतना से गुजरने को विवश करती है। हंस, जनवरी, २००७ में मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'प्रेत कामना' बौद्धिक पुरूष का आकर्षण एक स्त्री की नजर में कितना उम्दा और समर्पित है, कहानी कई दृश्यों से गुजरती है। एक, पुत्र की नजर में बौद्धिक पिता। दूसरी, नायिका अणिमा की दृष्टि में बौद्धिक पंथ एक और पारिवारिक भावना तो दूसरी ओर बौद्धिक पुरूष के अकेलेपन का सृजनात्मक चरित्र। जहाँ स्त्री सेतु की तरह है, निश्चय ही यह स्त्री के बौद्धिक आवां का एक अदद चरित्र है।

वंदना राग अपनी तरह की विशिष्ट कथाकार है जो अपनी तरह से स्त्री के जीवन को कैनवास पर उतारती है। 'मीना बाजार' और 'छायायुद्ध' उनकी अलग-अलग किस्म की कहानियां है। 'मीना बाजार' दिल्ली जैसे महानगरीय जीवन पर आधारित कहानी है। और अपनी तरह से स्त्री-छवि को प्रस्तुत करती है। निम्न वर्ग से लेकर एलीट वर्ग को प्रतिबिंबित करती है।

"दिल्ली का एलीटिस्ट सीन वाकई तेजी से बदल गया। .....बार पलटन की देर थी और 'पेज थ्री' आपको तेजी से बढ़ते नए एलीट की पूरी सूची से रूबरू करा देता था। दिल्ली हमेशा से ऐसी थी, न जाने तुझे ही हर बार इसमें कुछ नया क्यों लगता है, रमण बताया करता था। रमण जो उसका कालेज का साथी।"[५]

'जेम्स वॉट की केतली' एवं 'पुरूष-विमर्श' कुसुम भट्ट की कहानियां है। वह अपनी कहानियों में स्त्री की समस्याओं को अपने ढंग से उठाती है। 'पुरूष-विमर्श' कहानी में लेखिका पुरूषिया डाह को अभिव्यक्त करती है। पुरूष का नैतिक पतन किसी भी क्षण हो सकता है, जरा-सी असावधानी होने पर। नारायण तिवारी' सद्चरित्र है, जिसे नीलम दुबे व अन्य स्त्री-पुरूष देवता होने की संज्ञा देते है जो अपने ही आफिस में चपरासी बंटू की कारगुजारियों से दुश्चरित्र साबित हो जाता है। वहीं ईश्वर की अस्तित्व को सिरे खारिज करती है। स्त्री अपने देह को परिभाषित करती है, "आखिर. .. इस देह की आवाज कैसे अनसुनी कर दूं..... महिनों हो गए इसे स्पर्श भी नहीं किया ठहरा......।"[६] क्योंकि स्त्री-देह की भाषा मौन होती है जिसे एक स्त्री की समझ सकती है।

चर्चित कथाकार स्नोवा बार्नो 'बारदो' एवं 'लो मैं फिर लौट आई' कहानियां है जो मानव जीवन के आपसी प्रेम संबंधो की रागात्मक गाथाएं है। 'बारदो' मृत्यु एवं प्रेम की अद्भुत गाथा है। यह कहानी पाठक को अतल गहराइयों में ले जाने की कथा है। एक ओर एकांतिकता, दूसरी तरफ प्रेम मर्म स्पर्श हृदय को स्पर्श करता रहता है। पॉल अंदर ही अंदर गोते लगा लगा रहा था, "तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम पहले तो एक अच्छे चिकित्सक का ही प्रेम है फिर आगे एक हम उम्र और सलोने साथी से उस स्त्री मित्र का हार्थिक प्रेम है, जो यह देखकर आतंकित है कि अगले कुछ ही महीनों या दिनों में साथी की यह खूबसूरत देह नहीं रह जाएगी और यह सदमा बहुत बड़ा होगा।"[७] प्रतिभादास की 'जलमग्नी' स्त्री-पुरूष समन्वय की गाथा है जिसे प्रतिभादास ने बड़े ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया है कहानी की नायिका की कथन है, "मैं उनको कैसे बताऊँ कि मुझे सबसे बड़ा अवार्ड तो उन्हें दे दिया अपने परिवार को अपनाकर। यह जलमग्नी के प्रयोग से भी बड़ा प्रयोग था जोकि इतना सफल रहा। इसकी आत्मतृप्ति इतनी अधिक थी कि अब मेरा हृदय और किसी सम्मान की आशा नहीं रखता था।"[८] रमणिका गुप्ता अपने समय की सुपरिचित कथाकार है वह स्त्री की यौन संवेदनाओं, द्वंद्व को अपने ढंग से उठाती है। उनकी कहानी 'ओह ये नीले आँखे'

स्त्री-पुरुष आकर्षण के खिंचाव की कथा है दूसरी तरफ लिंग भेद को नकारती है। यौन कुंठा का भी परिष्कार एवं परिसंस्कार करती चलती है और मर्यादा रूपी बंधन को तोड़ देती है।

और थोडी देर बाद उस नीलिमा ने मुझे घेर लिया। मैं नहीं रही थी। नीला आकाश बन गई थी मैं-जिसका कोई ओर छोर नहीं होता। मैं स्त्री नहीं आदि स्त्री बन गई थी सृष्टि की प्रथम स्त्री-विश्व की प्रथम नागरिक मानव स्पोसिस की प्रथम मादा। मैं जो अभी-अभी जन्मी थी, जो अभी तक स्त्री या नारी की संज्ञा हासिल नहीं ले पाई थी। मेरे भीतर बैठी स्त्री विराट मनुष्य में बदल गयी थी, जो लिंग भेद से ऊपर थी। जिसे 'मर्यादा की छड़ी' उठक-बैठक नहीं करवा सकती थी-जो आरोपित नई मर्यादा को ध्वस्त करती थी।"[९] मर्यादा का विखण्डन मुक्त होती नारी की ओर संकेत है। कविता की कहानी 'कला की विरासत' की अनंतकथा है। सोनाली सिंह की कहानी 'क्यूटीपाई' वतनगाथा है नरेटर की दृष्टि शरत की-सी है जो ढलान में चढ़ाई देखते हैं। सरिता वर्मा की 'वैक्यूम' विज्ञान के दुरूपयोग से उपजी विकृति को दर्शाने के साथ ही एक स्त्री की आदर्श समझ भी प्रस्तुत करती है। सुमित्रा महरोल की 'अघात' कहानी सवर्णों की दलितों के प्रति बरती जाने वाली दोगली नीति का पर्दाफाश तो करती ही है दलितों में अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए जाग्रत चेतना व प्रतिरोध का भी सफल अंकन है।

अल्पना मिश्र की 'पुष्पक विमान' नई एवं पुरानी युग की आख्यान कथा है। हुस्न तबस्सुम 'निहां की नीले पंखों वाली लड़कियां' मुस्लिम जीवन के समाज की लड़कियो ओर संकेत करती है जहां वह स्वयं आधुनिक शैली को अपनाने लगी है। उसी का चित्रण करती है। ऊषा ओझा की कहानी 'आखिरी निशानियों को बचा लो' में दक्षिणी अडमान द्वीप की विलुप्त होती जनजातियों की ओर संपूर्ण समाज का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है। जनवरी २०११ में सुषमा मुंनींद्र की कहानी 'कसरतवाली' स्त्री-अस्मिता की पहचान कराती है। स्वाति तिवारी की कहानी स्त्री-मुक्ति एवं बेजान बस्ती में स्त्री जीवन में की बेड़ियों को खोलती है। दिव्या माथुर की '२०५०' प्रोद्योगिकी जीवन उत्तर आधुनिक कथा है। कूवा- ७-नीमकश प्रत्यक्षा की कहानी है। जय श्री की कहानी 'एक रात' में स्त्री संवेदनाओं को उकेरती है।

कवयित्रियों की रचनाएं

जहाँ कथा-फलक पर लेखिकाओं ने कथा-साहित्य का सृजन किया है और अपने अंतरंग-बहिरंग पक्ष, अंतर प्रवासी, प्रवासी जीवनानुभव को विविध पक्षों पर कलम चलाई है। उसी प्रकार कवयित्रियों ने कविता में अपनी पीड़ा का आख्यान प्रस्तुत किया है। स्त्री कवयित्रियों में कात्यायनी ने अपनी अलग छवि बनायी है। 'औरत और घर' कविता 'स्त्री-अस्मिता' का बोध कराती है। यथा :

"औरत क्या एक घर के बिना भी हो सकती है
या फिर क्या कोई और भी चौहद्दी हो सकती है
सुखपूर्वक रहने-खाने-जीने के लिए
घर के अलावा
जिसमें रहते हुए औरत औरत बनी रहे और
घर घर भी बना रहे।"[१०]

कविता संग्रह 'सात भाइयों के बीच चंपा' में स्त्री-लेखन के एक नए और संघर्षशील आयाम की अभिव्यक्ति हुई है। तब से उनकी कविता ज्यादा बुनियादी और प्रखर हुई है जिसमें व्यापक राजनीतिक सरोकारों का स्वर अलग सुनाई देता है।[११] इनका दूसरा कविता संग्रह 'इस पौरूषपूर्ण समय में' तथा तीसरा कविता संग्रह 'जादू नहीं कविता' है। 'कुर्स्क' के कैप्टन की अंतिम चिट्ठी पत्नी के नाम' इनकी लम्बी कविता है जो हंस, मार्च २००१ के अंक में प्रकाशित हुई है। यह कविता पति-पत्नी के संबंधो पर आधारित है। जब कैप्टन 'कुर्स्क' मृत्यु के नजदीक पहुँच रहे थे, तो अपनी पत्नी 'अकेला' को लिखी थी। उसी से प्रेरित रचना है। संबंधो का निश्छलपन इस कविता की अपनी विशेषता है,

'सागर तट पर तुम्हारा
दूर तक भागते चले जाना निर्वस्त्र,
पागलों की तरह, या शायद,
एक मासूम पवित्र बच्ची की तरह
सब कुछ ओल्गा, सब कुछ,
और यह भी याद आता है मुझे
दिल पर तीखे नश्तर की तरह
कि हम सोच रहे थे अभी पिछ्ली ही बार
कि अब उसे होना चाहिए।"[१२]

'कवि उपन्यासकार और निबंधकार अनामिका की कविता का मुहावरा कई अर्थों में अपनी समकालीन महिला कवियों से बहुत

अलग है। उसमें 'स्त्रीजनोचित' मानी जाने वाली युक्तियां प्रायः नहीं हैं। उनके शिल्प में शांति, संयम और कोमलता की बजाय एक नाटकीय, प्रहसनात्मक मुद्दा है जिससे वे आधुनिक समय में स्त्री की अनेक विडंबनाओं को देखती-परखती हैं। पुरूष, परिवार, बाजार, इतिहास और समय स्त्री के प्रति किस-किस तरह से व्यवहार करते हैं, इसकी पड़ताल उनकी रचनाओं का केंद्रीय सरोकार है और इन कथ्यों के अनुरूप उनकी भाषा संवादमय, गद्यात्मक, व्यंग्यपूर्ण और शोधपरक होती गयी है।"[१३] अनामिका की कविता 'लिफ्टनामा' स्त्री की मनोविज्ञान पारिवारिक संबंधों का अंकन है।

"हर जगह भीड़ भी बहुमंजिली
और सबको इंतजार था 'लिफ्ट' का-
पैदा होते ही माँ की बाहों और पिता के कंधो की
फाहानुमा लिफ्ट.....
साँस चुक जाने पर चार और कंधो की पालकी
सबको ही चाहिए थी।"[१४]

यह धीमा व्यंग्य एवं सच का तीखा यथार्थ है। 'चोर-सिपाही-राज-मंत्री' कविता में 'भ्रष्टाचार' एवं भ्रष्टतम सत्ताधारियों पर व्यंग्य किया है।

"अरे, खेल के बाहर मैं तो खड़ा था-
अपनी माँ का इकलौता लड़का-
मुझे कहाँ ले जाते हो भाई!
लो, बीड़ी के पैसे ले लो
और मुझे अपने घर जाने दो।"[१५]

'मेरे दुश्मन' कविता वह 'धार्मिक अनास्था' को व्यक्त करती हैं।

"डिसले में सजे हुए हैं मेरे दुश्मन
लेकिन बिकंगे नहीं-
पत्थर की प्रतिमा हैं वे
दुकान के शोकेस में राजे।"[१६]

'वर्तिकानंदा' समय-समाज की अनुभव कथा, स्त्री जीवन के कटु संदर्भों को भी बयान करती है। 'टीवी एंकर और वो भी' में मीडिया पर भी पुरूष-सत्ता की प्रभाव दिखाया है। चूँकि विजुअल मीडिया भी 'स्त्री' को 'उत्पाद' में बदलने की प्रक्रिया है।

"ये खबरों की दुनिया है।
यहाँ जो बिकता है, वही दिखता है।
और अब टीवी पर गाँव नहीं बिकता
इसलिए तुम ढूंढो अपना ठौर
कहीं और।" [१७]

'फिर मैं क्यों बोलूं' में वह यांत्रिक होते शहर के लोगों का चित्रण करती है,

"शहर के लोग अब कम बोलते हैं,
वे दिखते हैं बसों-ट्रेनों में लटके हुए
कार चलाते
दफ्तर आते-जाते हुए
पर वे बोलते नहीं।" [१८]

'बोलती है रोटी' परंपरा से वशीभूत नारी का चित्र खींचती है। स्त्री के उस तथ्य को प्रकट करती है जो सदियों से जिससे सभी लोगों का संबंध रहा है। किंतु वह टूटकर भी नहीं टूटती है जिंदगी को अपने अंदाज में जीने लगती है।

"रोटी बोलते हुए लगा
जिंदगी का फल सफा गोल है।
रोटी जली, तो लगा, वे-स्वाद
रोटी से माटी की खुशबू आई
मन ने कहा, जिंदगी जीने की चीज है।"[१९]

वर्तिका नंदा अपने अंतस की पीड़ा को वह बचपन में देखती जहाँ वह सब कुछ समझती थी, किंतु बोल पाने में असमर्थ भी। इसी संदर्भ में 'नमकपारे', 'शब्दहीन', 'वो बत्ती, वो रातें' 'संवाद' कविता स्वयं से संभाषण करती है।

रंजना जायसवाल ने समाज में स्त्री के प्रति 'पब कल्चर' में व्याप्त होती स्त्री को दिखाया है जहाँ वह पुरूष के वर अक्स देखने का प्रयास करती है तब उसे पुरूष बदचलन नारी के रूप में देखता है, नाकि एक स्त्री के रूप में। 'शराब खाने में स्त्री' महानगरीय स्त्री के चरित्र को वह पुरूष के बराबर महसूस करती है।

"शराब खाने के इतिहास में
यह पहली घटना थी

एक स्त्री ले रही थी
शराब की चुस्कियाँ
सबसे बेपरवाह
थकी हुई थी
शराबखाने के स्थाई ग्राहकों में
खलबली थी
-विदेशी ब्रॉंड है देशी की भला क्या औकात?
नशा भी है या सिर्फ दिखता है।"[२०]

'मेरा स्लोगन' कविता में स्त्री के माध्यम से वह स्त्री की भाषा बोलती है। 'स्त्री' द्वारा 'स्त्री' को 'वेश्या' कहने पर वह स्त्री पर नाराज नहीं होती है। वरन् पुरूष द्वारा 'वेश्या' कहने पर गुरेज करती है।

"स्त्री ने स्त्री को कहा-वेश्या
मैं बदली बनी
लेखिका ने दूसरी लेखिका को कहा-छन्ती सी
बैं बरस पड़ी
और घुलकर पसर गया
बरसों की मेहनत से लिखा
मेरा स्लोगन-स्त्री नहीं स्त्री की शत्रु।"[२१]

'पूजा खिल्लन 'फैशन' कविता में 'ग्लैमर' प्रभाव से मंजित नारी का चित्रण करती है जो पहले से ही परंपरावादी है 'नारी' करे 'फैशनपरक' होना बर्दाश्त नहीं करते, किंतु समय के आगे उन्हें झुकना पड़ता है। और कह उठती है-

"वह निर्द्वंद्व निर्मम हँसी आगे बढ़ी
और देखते ही देखते वातावरण में
घुल गई
शुरूआत से, अपनों के ताजा लहू की
गंध को भीतर महसूस ले वो चेहरे
जो अब तक तमतमाए थे
सभा के उस फैशन में काफूर हो गए।"[२२]

'मैं नयी हूँ' में वह नई उड़ान भरती प्रतीत होती है।

"चूँकि मुझसे होकर ही
दुनिया के सारे अनुभव
नए बनते है।"[२३]

स्नेहमयी चौधरी की 'ठौर-ठिकाना' कविता में जाने की क्रिया-प्रतिक्रिया से गुजरती जा रही है और मुक्त' होते बंधन जा रहे है। वह स्थान की प्रवाह नहीं करती हैं।

"मुझको तो
अब जाना है
जहाँ मेरा ठौर ठिकाना है
ठौर से अब क्या लेना-देना?"[२४]

शकुन बनजाड़े श्रमिक नारी का उस रूप का चित्रण करती है, जिसे अधिकांशतः कवियों की कलम से चित्रण नहीं हो पाता। उनकी कविता 'चेहरा' से एक उदाहरण :

"मेरे श्रम का सम्मान चिन्ह
गाल काम के बोझ से
धंस गए।"[२५]

कुमुद की कविताएं 'बेदिशों के घेरे में' और 'वस्त्र हरण' अपनी तरह की अनूठी कविताएं है जो अपनी पहचानने बनाने के लिए जद्दोजहद करती है। अपनी अस्मिता पहचान करने लगती है।

"मुझे मान मिला गौरव मिला।
मैं काल के बिल्कुल पास हूँ,
आज तलाश रही हूँ जीवन में
मैं क्या खोई मुझे क्या मिला।
इन बंदिशों के घेरे में।"[२६]

वह फैशन की दुनियां में अपनी पहचान बनाना चाहती है। 'वस्त्र हरण' कविता में वह लिखती है-

"मेरे सवा सौ करोड़ के नगेपन से
तेरे हर अभिषेक की जय घोष करूंगी
मेरे वस्त्र हर तू नोबेल भी जीत
मैं वस्त्र हरण पर नाज करूँगी।"[२७]

पुष्पिता अवस्थी अपने अंदर की पीड़ा को शब्दों के द्वारा बयान करती है। 'आर्तनाद', 'स्वत्व', 'प्रणयानुभूति' और 'शब्द-प्राण' प्रेम की पीड़ा की दैहिक दास्तान है। जिसे स्त्री सदैव अपने अंतस में महसूस करती रहती प्रयोग करती दिखाई पड़ती है। 'स्वत्व' कविता से उदाहरण

आदमी अपनी जिंदगी में

जीता है-कई औरतें
और
औरत जिंदगी भर
जीती है-अपने भीतर का आदमी।"[२८]

पूनम सिंह समय की आहट को अपनी कविताओं में कैद करना अच्छी तरह जानती है। 'जहाँ खत्म होती है सब कुछ' कविता प्रेम संबंधो से आगे जाने की कथा। वह भावनात्मक प्रेम से निकलकर व्यावहारिक रूप में प्रवेश करती है। वह कहती हैं-

"प्रेम में असंख्य रातों के बाद
आती है सुबह
इस सूर्योदय के लिए
मुझे तय करनी है अपनी भूमिका
निर्धारित करना है अपना पक्ष
और प्रवाह किए बगैर तुम्हारी
कहना तुम से
जहाँ खत्म होता है सब कुछ
एक नई शुरुआत वहीं से होती है।"[२९]

हर प्रीत कौर की 'औरत' एवं 'मैं तुम्हें फिर मिलूँगी' भी स्त्री-पुरुष प्रेम संबंधों की कविताएं हैं।

निष्कर्षतः महिलाओं की लेखनी ने साहित्य में हलचल पैदा की है लेकिन समाज की आधी आबादी को अभी भी उसका पूर्ण हक मिलना बाकी है। महिला लेखन समाज के उस हिस्से का लेखन है जो हाशिये पर है। अभी भी दीवारें गिरी तो नहीं हैं लेकिन सांस लेने लायक झरोखा जरूर बन गया है।

संदर्भ ग्रन्थ

१ हंस, मार्च २००१, पृ० ७
२ वही, पृ० ६०-६१
३ हंस, मार्च २००१, पृ० ६१-६२
४ हंस, अक्टूबर २००९, पृ० १९
५ हंस, मार्च २००७, पृ० ३०
६ हंस, अक्टूबर २००९, पृ० १४
७ हंस, फरवरी २००७, पृ० ३०
८ हंस, नवंबर २००९, पृ० ६०
९ हंस, सितम्बर २००८, पृ० २२
१० हंस, मई, २००८, पृ० २०
११ हंस, जनवरी २००९, पृ० ४४
१२ हंस, अप्रैल १९९३, पृ० ४३
१३ हंस, मार्च २००१, पृ० ४७
१४ वही, पृ० ४९
१५ हंस, मार्च २००१, पृ० ७८
१६ वही, पृ० ७९
१७ वही, पृ० ८०
१८ हंस, जुलाई २००८, पृ० ५०
१९ वही, पृ० ५१
२० वही, पृ० ५१
२१ हंस, नवम्बर २००९, पृ० ८१
२२ हंस, दिसम्बर २०१०, पृ० ५३
२३ हंस, दिसंबर २०१०, पृ० ५३
२४ हंस, जून २००९, पृ० ४७
२५ हंस, मार्च २०१०, पृ० ४५
२६ हंस, नवम्बर २००९, पृ० ५६
२७ वही पृ० ४२
२८ हंस, जुलाई २००९, पृ० ४९
२९ हंस, जुलाई २००९, पृ० ४९

Copyright © 2015, Dr. Shipra Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.